हिन्दी–Hinglish मनोरंजन

ज़हनजोरी

मोहित शर्मा ज़हन

ज़हनजोरी

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-399-7

Price: ₹ 214.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

ज़हनजोरी...

हिन्दी - Hinglish मनोरंजन

मोहित शर्मा 'ज़हन'

लेखक के बारे में

मोहित शर्मा ने बचपन में बाल कविताओं, कहानियों से अपने लेखन की शुरुआत की और वर्ष 2006 में 12वीं के बाद सक्रिय रूप से पत्र–पत्रिकाओं के लिए और इंटरनेट पर लिखने लगे। अब तक उन्होंने अनेको रचना–पद्धतियों व शैलियों में हजारों कहानियों, कविताओं और लेखो की रचना की है। इस बीच उनकी कई ई–बुक्स, कॉमिक्स, रचना संग्रह प्रकाशित हुए और उनकी लोकप्रियता बढ़ी, जिसका अंदाजा इंटरनेट पर कुछ श्रेणियों के अनुसार उनके आधा दर्जन से अधिक प्रचलित स्यूडोनिम या छद्म नामों से लगाया जा सकता हैं। ''ज़हनजोरी'' से पूर्व मोहित द्वारा रचित बोंजाई कथाएँ, नारीपना, काव्य कॉमिक्स, इंफ्रा सुर्ख शायर्स, देसी–पन, 84 टियर्स, इंडी हॉरर, लॉन्ग लिव इंकलाब जैसी कई किताबें लोकप्रिय रही हैं। मोहित ने 2013 में ऊर्जा व्यापार में एमबीए की डिग्री अर्जित की।

2006 से ही मोहित अपने सामाजिक उपक्रम फ्रीलैंस टैलेंट्स के माध्यम से कला के कई क्षेत्रों में (लेखन, चित्रकला, डिजिटल आर्ट, संगीत, हस्तकला, अभिनय आदि) में सक्रिय प्रतिभावान कलाकारों को साथ लाने और मौका देने में प्रयासरत रहते है। इस सामाजिक पहल की मदद से कई कलाकारों को एक–दूसरे के साथ कोलैबोरेशन का, प्रकाशित होने का और अधिक लोगो तक अपना काम पहुंचाने का मौका मिला है। प्रिंट मीडिया के साथ–साथ मोहित रचनात्मक या सामाजिक कार्यों से जुड़ी पॉडकास्ट, शॉर्ट फिल्म, रिकॉर्डिंग, वर्कशॉप और प्रदर्शनियों का हिस्सा बनते हैं। मोहित शर्मा के प्रचलित स्यूडोनिम हैं – ज़हन, Trendster, Trendy Baba, Mohitness, Freelance Falcon और समीर।

क्या है ज़हनजोरी...

कथा, कहानी, काव्य या कोई रचना लेखक–कवि को कई निर्णय लेने पड़ते हैं। जैसे क्या कोई विचार एक अलग कथा लायक है या किसी कथा के अंश के रूप में बेहतर लगेगा। कहानी छोटी न लगे कि सिर्फ मूल संदेश दिखे या इतनी बड़ी न लगे कि मूल संदेश ही गुम होने लगे। भाषा–शैली परिकल्पना के अनुकूल रहे, दिशा से भटकी न लगे। किरदार की परिस्थिति, आयु–जेंडर कहानी से बिल्कुल विरोधाभासी तो नहीं और ऐसी ही तमाम बातें। परम्यूटेशन–कॉम्बिनेशन का यह सफर कभी सफल होता है तो कभी पढ़ने वालो से जुड़ नहीं पाता। इन सबके बीच सबसे महत्वपूर्ण है, लेखक का रचना बुनने का अपना तरीका। उदाहरण के तौर पर मेरी रचना का किसी पाठक के लिए अलग और नया होना, उसके अच्छे या खराब होने से ज्यादा जरूरी है। इसी चक्कर में क्रम, किरदार, संवाद, पृष्ठभूमि और विचारों के प्रयोग–संयोजन में लगा रहता हूँ।

53 रचनाओं वाले ''ज़हनजोरी'' संग्रह की हर कथा, लेख और रचना ऐसे ही प्रयोगों और अनुभव का परिणाम है। कहीं जीवन का संघर्ष है, तो कहीं नादानी, कहीं उम्मीद है तो कहीं निराशा के थपेड़ों से बस शून्य, कहीं तिल–तिल घिसटता जज्बा है, तो कहीं खैरात मे मिली खानापूर्ति। इंटरनेट पर एक दौर था जब हिंग्लिश जोरों पर थी, जिसको अनुभव किए कलाकार जानते हैं, वह क्या सुनहरा दौर था। इस किताब में मेरे हाल के लेखन के अलावा उस दौर की कुछ कहानियां उसी रूप में संग्रह में शामिल की हैं। किसी समीक्षक ने मुझे कहा कि कहानियों का परिणाम अच्छा होना चाहिए। मेरी राय है कि कहानी का परिणाम सार्थक तब होता है, जब विभिन्न काल्पनिक परिस्थितियों और दृश्यों को इस तरह वास्तविकता से

जोड़ा जाए कि पढ़ने वाले की सोच, पूर्वाग्रहों पर चोट पड़े, इसके लिए चाहे बुरे किरदार के गलत दृष्टिकोण से कथा कहनी पड़े। कभी–कभी हास्यास्पद, दुखद, अधूरा, खुला या रैंडम अंत अन्य विकल्पों की तुलना में अच्छा होता है। एक निवेदन है कि इन रचनाओं से मुझे किसी छवि में कैद न करें, इंटरनेट व अन्य पुस्तकों में मैंने अलग–अलग शैली का लेखन किया है। आशा है यह प्रयास आपके मन को छूने के साथ–साथ एक अच्छा बदलाव लाने में सफल होगा।

मोहित शर्मा 'ज़हन'

माँ को माफ कर दो...

बीच सड़क पर चिल्ला रहे, जमीन पीट रहे, खुद को खुजा रहे और दिशाभ्रमित भिखारी से लगने वाले आदमी को भीड़ घेरे खड़ी थी। लोगो की आवाज, गाड़ियों के हॉर्न से उसे तकलीफ हो रही थी। शाम के धुंधलके में हर दिशा से आड़ी–तिरछी रौशनी की चमक जैसे उसकी आँखों को भेद रहीं थी। जिस कार ने उसे टक्कर मारी थी वो कबकी जा चुकी थी। कुछ सेकण्ड्स में ही लोगो का सब्र जवाब देने लगा।

''अरे हटाओ इस पागल को !!'' एक साहब अपनी गाडी से उतरे और घसीट कर घायल को किनारे ले आये। खरीददारी कर रिक्शे से घर लौट रही रत्ना घायल व्यक्ति के लक्षण समझ रहीं थी। एकसाथ आवाज, चमक की ओवरडोज से ऑटिज्म या एस्पेरगर्स ग्रस्त वह व्यक्ति बहुत परेशान हो गया था और ऐसा बर्ताव कर रहा था। भाग्य से उसे ज्यादा चोट नहीं आई थी।

''रोते नहीं, आओ मेरे साथ आओ।'' रत्ना उस आदमी को बड़ी मुश्किल से अपने साथ एक शांत पार्क में लाई और उसे चुप कराने की कोशिश करने लगी। ''भूख लगी है? लो जूस पियो–चिप्स खाओ।'' फिर न जाने कब रत्ना उस प्रौढ़ पुरुष को अपने सीने से लगाकर सिसकने लगी। पार्क में इवनिंग वाक कर रहे लोगो के लिए यह एक अजीब, भद्दा नजारा था। उनमे कुछ लोग व्हाट्सप्प, फेसबुक आदि साइट्स पर अपने अंक बनाने के लिए रत्ना की तस्वीरें और वीडियों बनाने लगे...पर रत्ना सब भूल

चुकी थी, उसके दिमाग में चल रहा था...''काश कई साल पहले उस दिन, मेरी छोटी सोच और परिवार के दबाव में तीव्र ऑटिज्म से पीड़ित अपने बच्चे को मैं स्टेशन पर सोता छोड़ कर न आती।''

समाप्त!

भूतनी बीवी

गर्मी और उमस से परेशान क्षितिज छत पर टहल रहा था तभी एक आवाज से वह ठिठका, जैसे किसी ने उसका नाम लिया हो। मन का वहम मान कर वह मुड़ा तो ''हू!'' उसकी पत्नी राधिका हँस रही थी। क्षितिज की घिग्घी बंध गई, राधिका को मरे 4 महीने हो गए थे। डर के मारे क्षितिज की लो फ्रीक्वेंसी चीख निकली जो इंसान तो नहीं पर शायद चमगादड़ सुन सकते थे। हँसते–हँसते पागल राधिका की आत्मा इस मोमेंट को भी एन्जॉय कर रही थी। फिर उसने क्षितिज को समझाया।

''डरो मत तुमसे मिलने आई हूँ बस, कुछ नहीं करुँगी।'' क्षितिज ने खुद को सम्भाला, आत्मा होते हुए भी राधिका के चेहरे की वजह से डर की जगह उसके मन में पुरानी यादें चलने लगी।

क्षितिज – ''क्या करती हो यार? अभी यहीं पजामे में ही सू–सू कर देता मैं! मुझे लगा तुम्हारा अकेले मन नहीं लग रहा तो मुझे मारने आई होगी।''

राधिका – ''हा हा हा....तुम्हारा चेहरा देख कर इतनी हँसी आई कि मन तो था थोड़ा कायदे से डराऊं तुम्हे। फिर सोचा कहीं फ्री फण्ड में हार्ट अटैक न आ जाए।''

क्षितिज बोला – ''...और यह बताओ तुम्हे ''हू'' करने की क्या जरुरत है तुम तो पहले से ही...''

कुछ देर खामोशी में दोनों एक–दूसरे को देखते रहे जैसे आँखों को भी बातें करने का मौका दे रहें हों, फिर राधिका बोली। ''बस तुम्हे देखने आई थी, दूर से देखकर

जा रही थी पर मन नहीं माना। बस एक चीज देखने की इच्छा है, नहीं तो मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी।''

क्षितिज आतुर होकर बोला – ''क्या? जो बोलो वो लाकर दूँ, क्या करूँ?''

राधिका – ''वो जो शॉर्ट्स में तुम चिकनी चमेली और बेबी डॉल में सोने की मैशअप पर डांस करते थे प्लीज वो दिखा दो....प्लीज प्लीज प्लीज!''

क्षितिज – ''सत्यानाश जाए तेरा करमजली चुड़ैल! हे भगवान....किसी को भेजो इसको ऊपर लाने के लिए।''

फिर क्षितिज ने शॉर्ट्स में इन आइटम सांग्स पर अपने अंदाज मे डांस किया और राधिका के ठहाके गूंजने लगे। जब गाने खत्म हुए तब नम हुयी आँखों को क्षितिज ने पोंछा पर अब राधिका वहां नहीं थी।

समाप्त!

सभ्य रोमानी बंजारा

अथाह समुद्र से बातें करना मेरा शौक है। यह हर बार मुझे कुछ सिखाता है। मैं सागर किनारे या नाव से किसी टापू पर या फिर सागर के बीचो बीच अक्सर आता हूँ। हाँ, जब कोई बात अक्सर हो तो उस से कभी–कभार बोरियत हो जाती है। वो ऐसा ही एक कभी–कभार वाला दिन था। इतना सीखा था सागर से कि ऐसे दिन झेले जा सकते थे। जब लगा कि अब चलना चाहिए तभी एक बोतल तैरती नजर आई। वाह! मन में बहुत सी बातें घूमने लगी। क्या होगा बोतल में? किसी खजाने का नक्शा, या किसी ऐतिहासिक हस्ती का आखिरी संदेश या परग्रहियों की नौटंकी?

बंद बोतल में कई कागज ठूंसे थे। जिनमें कुछ अंग्रेजी में और कुछ किसी और भाषा में। ज्यादा पढ़े लिखे इंसान की लिखावट नहीं थी उन पन्नो में, जैसे बड़ा–बड़ा बच्चे लिखते है कुछ वैसा था। अंग्रेजी वाले कागज पढ़े तो उनमे किसी के लिए कोई संदेश नहीं था। कविताएं, कहानियां थी! लेखन शैली से अंग्रेजी उसकी मातृभाषा नहीं लग रही थी फिर भी लिखने वाले की कल्पना के रोलरकोस्टर में मेरा सर चकरा गया। ख्याल आया कि जिस भाषा में उस लेखक को सहजता होगी, जिसके पन्ने मैं समझ नहीं पा रहा उस भाषा मे उसने क्या–क्या रच डाला होगा। दुनिया पलट देने वाला मसौदा एक जिन्न की तरह बोतल में बंद समुद्र की ठोकरें खा रहा था। अपने स्तर पर उस भाषा को जानने, उसके अनुवाद की

कोशिश की पर सफलता नहीं मिली। एक दिन मेरे पिता ने उन कागजों को मेरी डेस्क पर देखा और चौंक कर मुझसे उसके बारे में पूछा। मैंने जब सब बताया तो वो भावुक हो गए। उन्होंने बताया कि यह रोमानी भाषा से निकली किसी बोली में लिखे पन्ने हैं। मैं चौंक गया, आखिर जिस भाषा–बोली की पहचान इतनी भाग–दौड़ के बाद नहीं हो पाई वो मेरे पिता ने देखते ही कैसे पहचान ली? ऐसा क्या लिखा था उन कागजों में जो पत्थर से पिता को पिघला दिया?

कोई सवाल करने से पहले ही उन्होंने बताया कि उनके पिता एक फ्रांस के एक रोमा बंजारे थे। पिता बड़े हुए और शहर की चमक में टोली से अलग हो गए। उस समय (और शायद आज भी) ज्यादातर यूरोप के लोग रोमा लोगो को गंवार और दोयम दर्जे का मानते थे। टोली से अलग होने के बाद मेरे पिता ने अपना अतीत और पहचान बदल ली। किसी आम यूरोपी की तरह उन्हें नौकरी और परिवार मिला। घृणा से भाग कर अब नकली समाज की स्वीकृति मिल गयी थी उन्हें.... पर अब वो अपनी टोली का भोलापन याद करते हैं। वो सादगी जिसमे रिश्ते दुनियादारी से ऊपर थे। उन रोमा भाषा के पन्नो में दूसरे विश्व युद्ध में नाजी और सहयोगी दलों द्वारा लाखो रोमा और सिंटी लोगो के नरसंहार के कुछ अंश है। लिखने वाले ने शायद मदद की आस में या मरने से पहले मन को तसल्ली देने के लिए यह सब लिखा।

''कितनी पीढ़ियों, कितने गुलाम देश, गंवार–पिछड़े लोगों की लाशो के ढेर पर बैठे बड़ी इमारतों और छोटे आसमान वाले ये देश, दुनिया भर में खून की नदिया बहा कर होंठ के किनारे सलीके से रेड वाइन पोछने वाले ये देश अगर सभ्य हैं तो मैं गंवार, पिछड़ा रोमा बंजारा ही सही....''

पिता ने अपनी पहचान सार्वजानिक रूप से सबके सामने उजागर कर दी। दिल से कुछ बोझ कम हुआ। आधुनिक सभ्य लोगो की लालच की दौड़ में पिछड़े रोमा बंजारे किसी देश को बोझ ना लगें इसलिए मेरे पिता ने अपने स्तर पर जगह–जगह जाकर उन टोलियों में जागरूकता और साक्षरता अभियान की शुरुआत की।

समाप्त!

नोट – रोमानी समुदाय के लोग सदियों पहले उत्तर भारतीय हिस्सों से यूरोप और खाड़ी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में गए बंजारों के वंशज हैं। उनमे से कई आज भी अलग–अलग देशो में पिछड़ा जीवन जी रहे है। जो अपने लिए कुछ कर पाये वो सामाजिक शर्म या स्थानीय देशों की स्वीकृति के लिए अपनी पहचान बदल चुके हैं। यूरोपीय, दक्षिण अमरीकी व अन्य देशो को अब ये बंजारे बोझ लगते हैं, जिनके पूर्वज इन्ही देशो की गुलामी में पिसते रहे। रोमा लोगो के अपराध की दर पर हमेशा रोना रोया जाता है पर इनकी शिक्षा पर खर्च करने में नानी मर जाती है। अपने क्षेत्रों में दुनिया पर राज करने वाले चार्ली चैपलिन, एल्विस प्रेस्ली जैसे लोगों की रोमानी जड़ें थी। अगर मौका मिले तो उन देशो की अर्थव्यवस्था में अच्छा योगदान दे सकते हैं रोमा लोग। अगर? मौका? यह भी तो इतनी सदियों में उन देशो के नागरिक हैं? जो शायद अन्य प्रवासी लोगो से पहले इन देशो में आये पर कभी इन देशो ने उन्हें अपनाया ही नहीं। हाँ इन्हे जिप्सी, गंवार या कंजड़ जैसे नाम जरूर मिल गए।

ज़हनजोरी

ज़हनजोरी संग्रह कई फूलों का गुलदस्ता है। कुछ अनदेखे–चटख फूल, कुछ देखने में सुंदर, कुछ फूलों की महक मनमोहक और कुछ औरों की आड़ में छुपे कि किसी को उनकी कमी न दिखे। जीवन के अनेक पहलुओं से मिलवाते इस गुलदस्ते में न जाने कितनी अलग–अलग महक हैं। बच्चों की सी जिज्ञासा से जीवन को आवर्धक लेंस से खोजती इस दुनिया में आपका स्वागत है... आशा है ज़हनजोरी संसार में आपकी चहलकदमी सार्थक हो!

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-399-7
9 789360 263997